10th -ICARHSE
International Conference on Advance Research in Humanities, Applied Sciences and Education
Hosted from New York, USA
https://conferencea.org
Jan. 28th 2023

काशीनाथ सिंह की कहानियाँ : सामाजिक यथार्थ

श्रीमती सरिता
शोधार्थी, पीएच.डी. हिन्दी
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
उच्च शिक्षा व शोध संस्थान, चेन्नई, तमिलनाडु
प्रो. रामजन्म शर्मा
पूर्व अध्यक्ष भाषा विभाग एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
ई–मेल – saritadabas05@gmail.com

काशीनाथ सिंह हिन्दी साहित्य के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। लगभग पचास वर्षों के कालखण्ड एवं रचना संसार मे उन्होंने विविध विधाओं – कहानी, संस्मरण, उपन्यास, नाटक व आलोचना आदि में अपनी विशिष्ट रचनात्मकता द्वारा हिन्दी साहित्य को अमूल्य योगदान प्रदान किया और यह क्रम अनवरत जारी है।

साहित्यिक विधाओं हेतु संरचना संबद्ध चुनौती प्रस्तुत करते हुए उन्होंने समाज में परिवर्तन आधारित अनुभवों द्वारा विशिष्टता सहित रचना संसार में संवृद्धि की। वे वैचारिक परिप्रेक्ष्य में कबीरदास एवं प्रेमचंद से प्रभावित हैं; जहाँ कबीरदास की निर्भीकता से लबरेज हैं, वहीं प्रेमचंद की लोक गहनता से सराबोर हैं।

''काशीनाथ सिंह जोखिम उठाने में आगा–पीछा नहीं सोचते और कबीर, भारतेंदु की परंपरा के नए वाहक बनते हैं। कहना न होगा कि इस संदर्भ में वे अपनी पीढ़ी के अकेले कथाकार हैं।''[1]

[1] गपोड़ी से गपशप, संपादकीय, पल्लव, पृ. 7

उन्होंने मैक्सिम गोर्की का वैचारिक स्पर्श लिए समाजवादी यथार्थ को अंगीकार किया; मार्क्सवादी विचारधारा से ओत-प्रोत होने के साथ ही जनवादी विचारों का प्रवाह लिए प्रस्तुत हुए।

''काशीनाथ सिंह की चेतना में वामपंथी और जनवादी विचारों की पौध को पर्याप्त खाद पानी मिला।''[2]

वे साहित्य को परिवर्तन की प्रेरक शक्ति मानते हैं, साहित्य को मनोरंजन का स्रोत समझना उन्हें अस्वीकार्य है। उन्होंने इस भूमिका निर्वहन हेतु जीवन व जन के परिदृश्य को समावेशित कर पाखंड, मिथ्याडंबर, स्वार्थपरकता, मानव की दयनीय दशा आदि का चित्रण करते हुए; गाँव, कस्बे, शहर में व्याप्त शोषण, पूंजीवाद, मशीनी तंत्र, मनुष्य का अकेलापन, विसंगतियों को विविध रूपों में, समय के साथ परिवर्तित संदर्भों में चित्रित किया है।

'बच्चन सिंह' के शब्द उनकी भाषागत विशेषता की ओर संकेत करते हैं-

''काशीनाथ सिंह की भाषा ऊपर से सपाट, पर भीतर से अर्थवान है। अपने विनोदपूर्ण व्यंग्य के कारण वह कहानी के माहौल को जिंदादिल और संकेत को धारदार बना देती है। वे कहानी को अस्वीकार की ओर ले जाने की दिशा में प्रयत्नशील है।[3]

उन्होंने भाषा, शिल्प व कथ्य के स्तर पर नवीनता का चयन किया; वहीं उनकी रचनाओं में संवेदना की गहन पकड़, शब्दों की मितव्ययता व सही स्थान पर चोट करने की कुशलता व्याप्त है।

---

[2] पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा, कासी काठै घर करै... अभिजीत (सं), पृ. 5

[3] आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, बच्चन सिंह, पृ. 431

'लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय' लिखते हैं –

''भ्रष्ट परिवेश के साथ समझौता न कर पाना। ये जीवन के विद्रूप को लुका छिपाकर पेश नहीं करते, उस पर सीधा वार करते हैं। अपने बचाव के लिए वे आवरण नहीं तलाशते। वे बड़ी सहजता से बहुत गहरी बात कह जाते हैं। यही सफलता उनकी भाषा में भी है, जो अपने आसपास के जीवन से ही बेहिचक ली गई है।[4]

रचना संसार

काशीनाथ सिंह ने अपने रचना संसार का आरंभ जहाँ कविता से किया वहीं कहानी, उपन्यास व संस्मरण के क्षेत्र में भी नए प्रतिमान स्थापित किए।

उनके कहानी संग्रह हैं – लोग बिस्तरों पर, सुबह का डर, आदमीनामा, नयी तारीख तथा सदी का सबसे बड़ा आदमी। अपना मोर्चा, काशी का अस्सी, रेहन पर रग्घू, महुआचरित व उपसंहार प्रमुख उपन्यास है। 'घोआस' नामक नाटक इन्होंने लिखा है। संस्मरण के रूप में – याद हो कि न याद हो, आछे दिन पाछे गए और घर का जोगी जोगड़ा उल्लेखनीय हैं। काशीनाथ सिंह को उपन्यास रेहन पर रग्घू के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (2011 ई.) व भारतीय भाषा परिषद् के रचना समग्र पुरस्कार (2013 ई.) से सम्मानित किया गया। वहीं 'काशी का अस्सी' उपन्यास पर 'मोहल्ला अस्सी' नाम से फिल्म निर्मित है तथा यह देश व विदेश में एक सौ पच्चीस बार मंच पर अभिनीत हो चुका है, जो इसकी ख्याति का द्योतक है।

---

[4] द्वितीय महायुद्धेत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ. 150

इतने विस्तृत रचना संसार में दोहराव दृश्यमान न होना उनकी सृजनात्मकता एवं व्यापक वैचारिकता का प्रमाण है।

''पचास बरस की रचनाशीलता के बावजूद पाठकों का प्रिय और प्रासंगिक बने रहना हर लेखक के नसीब में नहीं होता।''[5]

काशीनाथ सिंह साठ-सत्तर के दशक से रचनाक्रम में रत है, वे स्वयं को उस दौर की प्रवृत्तियों के रचनाकार के रूप में स्वीकार नहीं करते, किंतु विविध आंदोलन का प्रभाव अंशत: उनकी रचनाओं में नज़र आता है। उन्होंने समय-परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ अनवरत रूप से लेखन में बदलाव को अंगीकार किया।

कहानियाँ एवं सामाजिक यथार्थ

काशीनाथ सिंह की पहली कहानी 'संकट' 'कृति' पत्रिका में सितंबर 1960 ई. में प्रकाशित हुई। उनका पहला कहानी संग्रह सन् 1968 में 'लोग बिस्तरों पर' प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् सुबह का डर (1975 ई.) आदमीनामा (1978 ई.) नयी तारीख (1979 ई.) तथा सदी का सबसे बड़ा आदमी (1986 ई.) प्रकाशित हुए।

वास्तविक रूप में उनकी प्रसिद्धि का प्रमुख आधारस्तंभ उनकी कहानियाँ ही रही; जिनमें सामाजिक सार्थकता, विशद् चित्रण, यथार्थता का उद्घाटन पूर्ण ऊर्जा के साथ दृश्यगत हैं। वे कभी-कभी कहानी की संरचना को भी तोड़ते दिखाई देते हैं।

संरचना के विषय में उनके विचार है -

---

[5] गपोड़ी से गपशप, संपादकीय, पल्लव, पृ. 5

''वह फार्म जिसमें हम लिखते रहे हैं, शायद आज की जिंदगी को व्यक्त करने के लिए नाकाफ़ी हो रहा है। फार्म में बँधकर सुविधाजनक तरीके से लिखना अपने को भी बचाना है और समय को भी छोड़ना है।''[6]

उनके सृजन की समाज-सापेक्षता, मार्मिकता, गहन, संवेदना, निर्भीक यथार्थ चित्रण, भाषा पर असाधारण अधिकार उसे नए आयाम प्रदान करता है।

काशीनाथ सिंह लिखते हैं-

''कविता में जो जगह लय की है, कहानी में वही कहानीपन की है।... कहानीपन के सिवा जिस चीज़ को कहानी के लिए अहम् मानता हूँ वह है - कहने का सलीका। कहानी ऐसे लिखी जाए जैसे कही जा रही हो - सुनाई जा रही हो। पढ़ने वाला पढ़ ही न रहा हो, सुन भी रहा हो। बल्कि सुनने के साथ उसे देख भी रहा हो।''[7]

अपने विचारों को चरितार्थ करते हुए उन्होंने अपनी कहानियों में इसे उकेरा है। पात्रों के प्रति पाठकों में सहानुभूति जागृत होना, गहरा जुड़ाव व आत्मानुभूति का संचार होता है।

मनुष्य की कहानियाँ गाँव, शहर से संबंधित; शोषण, समस्याएँ व विसंगतियों

का ऐसा चित्रण कि पाठकों को आभास होता है, वे उनका ही चित्रण कर रहे हैं।

जीवन से संबद्ध भारी-भरकम व अत्यंत गंभीर पलों को वे बड़े ही सहज व सरल ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। पाठक को अलाव के गिर्द बैठकर सुनने का अहसास होता है

---

[6] गपोड़ी से गपशप, मनीष दुबे से बातचीत, काशीनाथ सिंह, पृ. 87

[7] मेरी प्रिय कहानियाँ, भूमिका, काशीनाथ सिंह

जैसे वे स्वयं ही उस रचना के पात्र हैं। उन्होंने व्यक्ति और समाज के हर पहलू को छूने का प्रयास किया है।

प्रथम कहानी-संग्रह ''लोग बिस्तरों पर'' की पहली कहानी 'संकट' है, जो एक फौजी द्वारा उसकी प्रसूत हुई पत्नी पर, उसकी शारीरिक इच्छा की पूर्ति न होने के कारण किए गए अत्याचार को दर्शाती है। परिवार के सदस्य, तथ्य व सत्यता से अवगत होने पर भी चुप्पी साधे हैं, यह समाज का असली चेहरा है जो इस कहानी मे चिह्नित किया गया है।

''आखिर तुम कैसी बात कर रहे हो बेचन? तुम्हारा दिमाग़ तो नहीं खराब हो गया है?'' - राघो आवेश में आ गए थे, ''अगर छींकना छोटी बात है, तो बड़ी बात कौन सी है? ज़रा खुद सोचो, जो औरत आज मेरे सामने छींक रही है, वही कल मेरे बाप के सामने भी छींक सकती है।''[8]

'आखिरी रात' कहानी जहाँ आर्थिक परिस्थितियों के कारण पति-पत्नी के रिश्ते में खटास को व्यक्त करती है, वहीं 'कस्बा, जंगल और साहब की पत्नी' में एक पत्नी अपने पति के सम्बन्धों से समाज को अनभिज्ञ रखने व खुशहाल जीवन का बनावटी मुखौटा पहने है। जो समकालीन समाज में व्यक्ति के दो चेहरों को भली भांति उजागर करता है।

'अपने घर का देस' भी आर्थिक दीन दशा व स्वार्थ की पोल खोलती है। 'सुख' समकालीन मानव की दशा दर्शाती है, जो देश-विदेश के तमाम विषयों व संदर्भो से अवगत होने का दंभ भरता है, किंतु अपने आसपास के वातावरण व प्रकृति के अहसास से वंचित हो

[8] कहनी उपखान, संकट काशीनाथ सिंह, पृ. 27

चुका है। दूसरी ओर यह अकेले पड़ गए मनुष्य की विडंबना की ओर भी संकेत करती है, जिसके भाव केवल उसी के होकर रह गए हैं।

कहानी से अंश प्रस्तुत है –

''हाय! दुनिया कितनी बदल गई है; उन्होंने बार-बार सोचा। सोचा-कल शाम होगी। वे सभी लोगो की बुलाएंगे। सूरज दिखाएंगे और समझाएंगे कि देखो, दुनिया में चूल्हा, योजना, कचहरी, ऊँट और दूध ही सब कुछ नहीं है। सूरज भी है। पहाड़ियों से ऊपर होता है। ताड़ों के बीच में आता है। फिर काँपता है और फिर वह क्षण भी आता है, जब वह पहाड़ियों के पीछे जाता है और डूबने के पहले एक मुलायम किरण तुम्हारे गंजे सिर पर छोड़ जाता है। ... उन्हें दु:ख होने लगा, लेकिन कितने लोग हैं जो कल भी इसे समझ सकेंगे? वे बेचैन होने लगे।''[9]

'तीन काल कथा' के अंतर्गत मनुष्य की संवेदनहीनता का चित्रण है, जिसमें 'अकाल' कहानी में दस रूपये के लिए पुत्र को मौत के हवाले करना, 'पानी' लघुकथा में कुँए में गिरकर जान देने की अस्वीकार्यता का कारण व्यक्ति की जान नहीं, अपितु पीने का पानी था, अत्यंत हृदयविदारक है।

''खबर करने वाले चिंतित होते हैं और खड़े रहते है। 'साहेब, वह कुएँ में मर

गया तो हम पानी कहाँ पिएंगे?'' उनमें से एक आदमी हिम्मत के साथ कहता है।''[10]

---

[9] कहनी-उपखान, सुख, काशीनाथ सिंह, पृ. 18

[10] कहनी उपखान, तीन काल कथा, पानी काशीनाथ सिह, पृ. 130

'प्रदर्शनी' लघुकथा में नेताओं का वास्तविक स्थितियों की ओर से आँख मूँदकर आगे बढ़ जाना दर्शाया गया हैं।

'आदमी का आदमी' में उद्घाटित किया गया है कि अर्थ व्यक्ति से जो चाहे करवाता है। 'लोग बिस्तरों पर' कहानी पर 'अकहानी' की छाप है। 'सुबह का डर' मनुष्य के अंदर समाप्त होती मानवता का आख्यान है, जिसमें लोग मरीज के जीवन की अपेक्षा मौत की प्रतीक्षा में हैं, ताकि जल्दी से जल्दी पीछा छूट जाए।

'हस्तक्षेप' कहानी दर्शाती है कि निम्न वर्ग में क्षणिक आनंद के लिए लोग कैसे झगड़े को बढावा देते हैं, इसके विपरीत हस्तक्षेप कर झगड़े को रोकने वालों को सजा दी जाती है। यह समाज के बदलते मूल्यों की ओर संकेत करती है।

'दलदल' में नगरीय जीवन की विडंबना दर्शाई है, जहाँ नायक बीस वर्ष शहर में रहकर भी वहाँ का नहीं हो पाया।

''और देखो तो 20-22 साल हुए जब मैंने अपना गाँव, अपनी जमीन छोड़ी थी। तब से लगातार यह शहर मुझे तोड़ने-जज्ब कर लेने की फिराक में रहा है और मैं उसके खिलाफ अपनी सुरक्षा की लड़ाई लड़ता रहा हूँ।''[11]

'चोट' के अतर्गत जातिप्रथा को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है। निकमा, संचा को अर्थ के कारण चोट देता है कि वह जाति का अभिमान भूल जाए किंतु स्थितियों के परिवर्तित होने पर भी संचा स्वयं को ठाकुर ही समझता है।

---

[11] कहनी उपखान, दलदल, काशीनाथ सिंह, पृ. 97

'आदमीनामा' की पहली कहानी 'सूचना' भी महानगरीय जीवन के अजनबीपन अकेलेपन की ओर संकेत करती प्रतीत होती है।

'मुसाइचा' तथा 'माननीय होम मिनिस्टर के नाम' घूसखोरी व नेताओं के भाई-भतीजावाद, जो समाज का अंग बन चुका है इसी को उजागर करती कहानियाँ है। 'मीसा जातकम' आपातकाल की स्थितियों का चित्रण है जब निरपराध लोग यातनाएँ भोगते हैं।

जनवादी आंदोलन की प्रथम रचना होने के साथ ही 'सुधीर घोषाल' पर नक्सलवाद का प्रभाव भी नज़र आता है। 'बैल' जहाँ आर्थिक विषमता का चित्रण है वहीं 'अधूरा आदमी' गरीबी के कारण मनुष्य के भटकाव की दास्तान है। 'जंगल जातकम' जनवादी सोच को स्पर्श करती कहानी है, जो दर्शाती है जब साधारण मनुष्य व्यवस्था परिवर्तन का दृढ़ निश्चय करता है, तो परिवर्तन संभव है।

'कविता की नई तारीख' व 'मंगलगाथा' लंबी कहानियाँ है जो समकालीन साहित्य व प्रवृति में विरोधाभास प्रतीत होती हैं। प्रथम में आर्थिक संपन्नता के मद में मनुष्य का संवेदनाविहीन, स्वार्थी व्यवहार दर्शनीय है। 'कविता की नई तारीख' में रचनाकार की विशेषताओं का भी उद्‌घाटन किया है।

''एक राजनैतिक या नौकरशाह की नागरिकता संदिग्ध हो सकती है, क्योंकि उसके अपने व्यक्तिगत स्वार्थ होते है और सैकड़ों तरह के गलत-सही समझौते करने पड़ते हैं, मगर

एक लेखक अपनी धरती का सच्चा नागरिक होता है, क्योंकि उसकी जड़ जनता में होती है।''[12]

'मंगलगाथा' में उन सैनानियों पर व्यंग्य हे, जो झूठ का आधार लेकर सरकार से अनुदान प्राप्त कर पूंजीपति बन बैठे हैं।

'कहानी सरायमोहन की' परिस्थितियों में बदलाव की कहानी है, जो दर्शाती है कि पेट की आग जातीय भेदभाव को महत्वहीन बना देती है। साथ ही स्वयं को उच्च समझने वाले जातीय पाखंड का चित्रण करती है। 'सिद्दीकी की सनक' भी जातीय व्यवस्था पर करारी चोट है। वहीं 'वे तीन घर' में उन्नति के उपरांत अपने ही लोगों से दूरी बनाने का चित्रण है।

'दौलत का दुखडा' में आर्थिक संपन्नता की दौड़ में अंधे मनुष्य को जताने का प्रयास किया है कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण आत्मिक सुख व शांति है।

''आप तो पढ़े-लिखे हैं। आपको क्या बताना। लेकिन ऐसी चीजें पैसों या सामानों के बदले मिलती तो मेरे पास इस वक्त नींद का सबसे बड़ा जखीरा होता।''[13]

'मौजमस्ती के दिन' में आधुनिकता की दौड़ में व्यक्ति से अधिक महत्व जानवर को दिए जाने के समकालीन सामाजिक सत्य को उद्घाटित किया गया है।

वहीं 'संतरा' में एक ईमानदार व्यक्ति की गरीबी के कारण हुई अत्यंत हृदय विदारक दयनीय स्थिति दर्शनीय है।

---

[12] आलोचना भी रचना है, काशीनाथ सिंह, पृ. 139

[13] पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा, दौलत का दुखड़ा, काशीनाथ सिंह, पृ.66

'अपना रास्ता लो बाबा' एवं 'विलेन' आधुनिकता की दौड़ में अंधे होते मनुष्य की गाथा है, जो संबंधों को ताक पर रखकर नई सभ्यता की चादर ओढ़ने को आतुर है। 'अपना रास्ता लो बाबा' में लेखक ने नई पीढ़ी के व्यवहार को स्पष्ट किया है –

''तब से आज कितने साल हो गए हैं? सारा कुछ यूँ चिटकी बजाते-बजाते हवा में खो गया है। वे भी इतने ही सरल और आसान रहे होंगे जितने कि बाबा। और बाबा अब जा रहे हैं – कल के लिए नहीं, हमेशा के लिए। वे उन्हें रोक सकते हैं, लेकिन नहीं रोक सकते।''[14]

'बायस्कोप का लल्ला' में मीडिया के स्वार्थ का चित्रण है, साथ ही वंश परंपरा आधारित राजनीति पर भी व्यंग्य किया गया है।

''लला मोरा कुंजन से बनि आयो। सिर सोहै मलमल की पगिया मौरा में छवि आइ।

माथे सोहै चंदन बिन्दिया

सूरमा में छबि आइ।

लला मेरा कुंजन से बनि आयो।''[15]

लेखक ने वर्णित पंक्तियों में पद्य व देशज पदावली के माध्यम से राजनैतिक परिवार को अत्यधिक महत्ता प्रदान करने का चित्रण किया है।

---

[14] कहनी उपखान, अपना रास्ता लो बाबा, काशीनाथ सिंह, पृ.314

[15] कहनी उपखान, बायस्कोप का लल्ला, काशीनाथ सिह, पृ. 283

'सदी का सबसे बड़ा आदमी' नवीन परिदृश्य प्रस्तुत करती कहानी है, यह उस व्यक्ति को महान सिद्ध करती है, जो व्यवस्था को चुनौती देकर बदलाव की आकांक्षा रखता है और पूंजीपतियों के अहम् का तुष्टीकरण नहीं होने देता।

''शौक साहब धनाढ्य वर्ग के प्रतिनिधि हैं। उन्हें ऐसे बहादुरों की तलाश रहती जो कपड़े खराब होते ही माँ बहन का धुआंधार गालियाँ बकना शुरू करें, उछले कूदें, आसमान सिंह पर उठा ले, रो-रोकर मुहल्ले और राह चलतों को अपने इर्द-गिर्द जुटा लें, फिर बिलखें बिलबिलाएं और दया की भीख मांगते हुए, इंसाफ का वास्ता देते हुए बताएं कि अब वे क्या पहने, उनका क्या होगा?''[16]

इसमें पूंजीपति व आर्थिक रूप से संपन्न वर्ग के स्वयं की इच्छानुरूप समाज को चलाने तथा अपने को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने की प्रवृत्ति को उजागर किया गया है।

काशीनाथ सिंह की कहानियाँ विभिन्न दौर से गुजरती हुई युगीन परिप्रेक्ष्य व यथार्थ को आत्मसात कर उत्तरोत्तर विकसित हुई। कई कहानियों में अत्यधिक गूढ़ता दुरुहता का भी कारण बन गई जिनमें अस्पष्टता प्रतीत हुई।

''कभी-कभी परिवेश से इनका लगाव इतना अधिक आंतरिक हो जाता है कि ठीक-ठीक समझायी जा सकने वाली बात बेहद दुरूह बन जाती है।''[17]

---

[16] मेरी प्रिय कहानियाँ, सदी का सबसे बड़ा आदमी, काशीनाथ सिंह, पृ. 27

[17] नयी धारा, दूधनाथ सिंह, पृ. 240

उनकी कहानियों में वैविध्यता, स्वाभाविकता व सादगी के साथ प्रतीकात्मकता भी समावेशित है। कई कहानियाँ जैसे - 'लोग बिस्तरों पर', 'चायघर में मृत्यु', 'आदमी का आदमी', तीन-काल कथा इत्यादि में, जिनमें गूढ़ अर्थ गठित है, दुरुहता व्याप्त है।

काशीनाथ सिंह समकालीन परिवेश व सरोकारों के साथ जुड़कर यथार्थ का चित्रण करने वाले रचनाकार हैं, जो जनचेतना से जुड़कर समाज की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियाँ प्रमुखता से आधुनिकता के आग्रह में मनुष्य द्वारा पीछे छोड़ने वाले मूल्यों व आधुनिक विसंगतियों के ताने-बाने को यथार्थ रूप में पाठक के समक्ष चित्रित करती हुई परिवर्तन की बयार में अपने मूल संस्कारों को न खोने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। वे सामान्य जन के रचनाकार हैं।

काशीनाथ सिंह के शब्दों में -

''मैं विद्वानों और साहित्यिकों के बजाय आम लोगों की राय को ज्यादा महत्व देता हूँ। ... मेरे लिए साहित्य से बाहर के पाठक ज्यादा मायने रखते हैं, क्योंकि उनकी राय विशुद्ध पाठक की राय होती है।''[18]

काशीनाथ सिंह की कहानियों में संवेदना की गहन पकड़ है, जो पाठक को गहराई से स्पर्श कर प्रभावित करती है। उनके पाठक वर्ग में साहित्यिक जगत के साथ सामान्य जन भी प्रमुखता से व्याप्त है। वे सामान्य पाठक की राय को सर्वाधिक महत्व देते है। उन्होंने

[18] अरूण आदित्य से बातचीत, अमर उजाला, 12 अक्टूबर, 2008

कहानियों में भाषा, कथ्य, शिल्प के स्तर पर भी नए–नए संदर्भ उद्‌घाटित किए है। जो उनकी रचनात्मक प्रतिभा का ही प्रमाण है।

काशीनाथ सिह का रचनाकर्म जारी है, विविध विधाओं में वे अपनी लेखनरूपी तूलिका से समाज व व्यक्ति के यथार्थ चित्रण में रत है। आशा है भविष्य में कहानी विधा को अपनी सृजनात्मकता द्‌वारा और अधिक संवर्द्धित कर नई दिशाएँ प्रदान करेंगे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, काशीनाथ, 2010 कहनी उपखान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सिंह, काशीनाथ, 2011 मेरी प्रिय कहानियाँ राजपाल एंड संस, दिल्ली

सिंह, काशीनाथ 1996 आलोचना भी रचना है, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली पल्लव, 2013

(सं) गपोड़ी से गपशप, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

अभिजीत, 2016 (सं.) पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सिंह, बच्चन 2007, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन

वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर 1996, द्वितीय महायुद्धेत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजपाल एंड संस, दिल्ली

पत्र व पत्रिकाएँ

नयी धारा, फरवरी-मार्च 1966

अमर उजाला, 12 अक्तूबर 2008